3 सवैये

रसखान

(जन्म : सन् 1548 ई., निधन : सन् 1628 ई.)

रसखान का असली नाम सैयद इब्राहिम था । उसका जन्म दिल्ली के एक संपन्न परिवार में हुआ था । गोस्वामी विठ्ठलनाथजी से दीक्षा ग्रहण कर ब्रज में रहकर कृष्ण-भक्ति के पद लिखे । इस मुसलमान कवि की अनन्य कृष्ण-भक्ति सराहनीय है । इनकी कविता में कृष्ण की रूप-माधुरी, ब्रज-महिमा और राधा-कृष्ण की प्रेमलीलाओं का वर्णन हुआ है । उनकी भक्ति में प्रेम, शृंगार और सौंदर्य की त्रिवेणी बहती है । ब्रजभाषा का जैसा सरल-तरल, सरस-स्वच्छ और सजीव प्रयोग रसखान की कविता में मिलता है वैसा बहुत कम कवियों में प्राप्त होता है । रसखान जैसे भक्त कवियों को लक्ष्य करके ही भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने कहा था - 'इन मुसलमान हरिजनन पर कोटिक हिन्दू वारिए ।'

'सुजान रसखान', 'प्रेमवाटिका' और 'रसखान रचनावली' उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं ।

यहाँ रसखान के चार सवैये लिए गये हैं । इनके सवैयों में कृष्ण ही नहीं, कृष्ण-भूमि के प्रति अनन्य अनुरक्ति एवं समर्पण की भावना सजीव हुई है । कृष्ण की विविध लीलाओं का मनोहर वर्णन हुआ है । इन सवैयों में कृष्ण का धेनु चराना, बेनु बजाना, प्रेमरंग में रंगना और भंगिमाओं के साथ माधुर्यपूर्ण चित्रण हुआ है । कृष्ण के सामीप्य के लिए कवि लकुटी लेकर ग्वालों संग फिरने की बात करते हैं । शिक्षक छात्रों को बतायें कि एक मुसलमान कवि होते हुए भी रसखान कृष्ण-भक्ति में लीन थे ।

मानुष हौं तो वही 'रसखान', बसौं मिलि गोकुल गाँव के ग्वारन ।
जो पसु हौं तो कहा बस मेरो, चरौं नित नंद की धेनु मँझारन ॥
पाहन हौं तो वही गिरि को, जो धर्यो कर छत्र पुरंदर कारन ।
जो खग हौं तो बसेरो करौं मिलि कालिंदी-कूल कदंब की डारन ॥ 1॥

या लकुटी अरु कामरिया पर, राज तिहूँ पुर को तजि डारौं ।
आठहुँ सिद्धि, नवो निधि को सुख, नंद की धेनु चराय बिसारौं ॥
'रसखान' कबौं इन आँखिन सो, ब्रज के बन बाग तड़ाग निहारौं ।
कोटिकहू कलधौत के धाम, करील के कुंजन ऊपर वारौं ॥ 2॥

जा दिन तै वह नंद को छोहरो, या बन धेनु चराइ गयो है ।
मोहिनी ताननि गोधन गाइकै, बेनु बजाइ रिझाइ गयो है ॥
ताही घरी कछु टोना सो कै, 'रसखान' हिये में समाइ गयो है ।
कोऊ न काहू की कानि करै, सिगरो ब्रज बीर बिकाइ गयो है ॥ 3॥

मोर-पखा सिर ऊपर राखिहौं, गुंज की माल गरे पहिरौंगी ।
ओढ़ि पितांबर, लै लकुटी बन, गोधन ग्वारिन संग फिरौंगी ॥
भावतो वोहि मेरो रसखानि, सो, तेरे कहे सब स्वाँग भरौंगी ।
पै मुरली मुरलीधर की, अधरान-धरी अधरा न धरौंगी ॥ 4॥

शब्दार्थ

मानुष मनुष्य **बसौ** रहना करूँ **मँझारन** मध्य, बीच **पाहन** पत्थर **पुरन्दर** इन्द्र **कालिंदी-कूल** यमुना नदी का किनारा **लकुटी** लाठी **कामरिया** कम्बल **तिहूँ** तीनों **पुर** लोक **बिसरौं** भूल जाई **कोटिक** करोड़ **करील** एक कँटीला वृक्ष **कलधौत के धाम** सोने के राजमहल

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर उत्तर लिखिए :

(1) यमुना किनारे कदंब की डाल पर रसखान किस रूप में बसना चाहते हैं ?

(अ) पशु (ब) भगवान (क) पक्षी (ड) मनुष्य

(2) आठ सिद्धि और नव निधि का सुख प्राप्त होता है .....

(अ) नंद की धेनु चराने में । (ब) यमुना किनारे स्नान करने में ।

(क) कदंब के वृक्ष पर बसने में । (ड) मुरली बजाने में ।

(3) कलधौत के धाम का अर्थ होता है .....

(अ) काली यमुना नदी । (ब) सोने का राजमहल । (क) चाँदी का राजमहल ।(ड) कृष्ण का राजमहल ।

(4) गोपी गले में ..... माला पहनना चाहती है ।

(अ) सोने की (ब) हीरों की (क) मोतियों की (ड) गुंजे की

2. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) मनुष्य के रूप में रसखान कहाँ बसना चाहते हैं ?

(2) पशु के रूप में कवि कहाँ निवास करना चाहते हैं ?

(3) रसखान किस पर्वत का पत्थर बनना चाहते हैं ?

(4) पशुयोनि में जन्म मिलने पर कवि क्या करना चाहते हैं ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) लकुटी लेकर रसखान क्या करना चाहते हैं ? क्यों ?

(2) श्रीकृष्ण को रिझाने के लिए गोपी क्या-क्या करना चाहती है ?

(3) गोपी कृष्ण की मुरली को अपने अधरों पर क्यों नहीं रखना चाहती ?

4. निम्नलिखित प्रश्नों के चार-पाँच वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) रसखान श्रीकृष्ण का सामीप्य किन रूपों में किस प्रकार चाहते हैं ?

(2) कवि श्रीकृष्ण से संबंधित किन वस्तुओं की अभिलाषा करता है । इनके लिए वह किन वस्तुओं को छोड़ने के लिए तैयार है ?

(3) कृष्ण की मुरली का ब्रज की स्त्रियों पर क्या प्रभाव पड़ा ?

(4) कृष्ण के प्रति अपनी भक्ति प्रदर्शित करने के लिए रसखान क्या-क्या न्यौछावर करना चाहते हैं ?

5. उचित जोड़े बनाइए :

'अ'	'ब'
मनुष्य	नंद की गाय
पशु	यमुना के किनारे कदंब की डाल
पक्षी	गोवर्धन पर्वत
पत्थर	गोकुल गाँव

योग्यता-विस्तार कीजिए

- 'इन मुसलमान हरिजनन पर कोटिक हिन्दू वारिए' कवि रसखान के संदर्भ में इस कथन की चर्चा कीजिए ।
- 'सवैये' कंठस्थ करके उनका सस्वर पठन कीजिए ।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- रसखान के अन्य 'सवैये' छात्रों को बताइए ।
- रसखान द्वारा रचित सौंदर्य के कुछ सवैयों की सूरदास के बाल-सौंदर्य एवं कृष्ण-भक्ति के पदों से तुलना करवाइए ।

●